इस प्रकार 'मैं कौन हूँ?' ये अत्यंत सहज प्रतीत होने वाले प्रश्न का उत्तर देना सबसे कठिन है।

मैं कौन हूँ? यह मूल प्रश्न है जो हिंदू सभी को पूछता हैं। सही जवाब देने के लिए काफी प्रयास करने पर भी सही जवाब बिल्कुल नहीं मिल रहा है! फिर भी इंसान खुद को बुद्धिमान प्रजाति कहता है! और इंसान स्वयं की पहचान के ज्ञान के बिना दूर की आकाशगंगाओं में ग्रहों की खोज करता है!

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

'मैं कौन हूँ?' इस प्रश्न के उत्तर की दो मुख्य शाखाएँ हैं। एक शाखा शरीर से 'मैं' की पहचान करती है और दूसरी आत्मा से 'मैं' की पहचान करती है।

अगर हम 'मैं शरीर हूँ' को स्वीकार करते हैं तो 'मैं' को शरीर में होने वाले परिवर्तनों के साथ बदलना चाहिए क्योंकि 'मैं' की इस परिभाषा के अनुसार, शरीर 'मैं' है और बच्चे का शरीर वयस्क की तुलना में अलग है। इस प्रकार बच्चे का 'मैं' वयस्क के 'मैं' से अलग होना चाहिये।

लेकिन हर एक को बचपन और वयस्कता में एक ही 'मैं' का अनुभव होता है। वही 'मैं' जो बच्चा था अब बडा बन गया हूँ इस प्रकार की शरीर में होने वाले परिवर्तनों से पहले और बाद में उसी 'मैं' की भावना की निरंतरता को कैसे उचित ठहराया जा सकता है? यदि आप निरंतर रासायनिक या जैविक परिवर्तन की क्रिया पर विचार करते हैं तो अभिकारक और उत्पाद समान नहीं होते हैं।

लेकिन हमें वही 'मैं' लगता है। यह दर्शाता करता है कि

यह पूरा शरीर किसी ऐसे 'मैं' का है जो शरीर से अलग है। जिस तरह घर में नवाचार या परिवर्तन से घर के मालिक के 'मैं' की भावना में बदलाव नहीं होता है, इसी तरह, भले ही जन्म से लेकर मृत्यु तक शरीर की संरचना में नवाचार या परिवर्तन होते हैं, मगर 'मैं' जो इस शरीर रूपी घर में रहता है वह शरीर में बदलाव होने पर अपनी पहचान को बरकरार रखता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132